

स्मृति-सन्दर्भः

श्रीमन्महर्षिप्रणीत—धर्मशास्त्रसंग्रहः

मन्वादिदशस्मृत्यात्मकः

प्रथमो भागः



नाग प्रकाशक

११ ए/यू. ए., जवाहर नगर, दिल्ली-७

अथ स्मृतिसन्दर्भस्य प्रथमभागस्य मुद्रितस्मृतीनां नामनिर्देशः

स्मृति नामानि	पृष्ठाङ्काः
१. मनुस्मृतिः	१
२. नारदीय मनुस्मृतिः	२५०
३. अत्रिस्मृतिः ...	३३६
४. अत्रि संहिता ...	३५२
५. प्रथम विष्णुस्मृतिः (माहात्म्यं)	३८६
६. विष्णुस्मृति ...	४०१
७. सम्बत्तस्मृतिः ...	५४७
८. दक्षस्मृतिः ...	५६६
९. आङ्गिरसस्मृतिः —	५६१
१०. शातातपस्मृतिः —	५६८

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स्मृतिसन्दर्भ प्रथम भाग की विषय-सूची

मनुस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
१	सृष्ट्युत्पत्तिवर्णनम्—	१
	सृष्टि की रचना का वर्णन; जल से सृष्टि की रचना हुई (श्लोक १-८)। इसी प्रकार पहले-पहले मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा आदि सप्त ऋषि, देवता, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, पिशाचादि की उत्पत्ति (३७-४१)। फिर जरायुज, अण्डज, उद्भिज्ज, स्वेदज, वनस्पति आदि की उत्पत्ति (४२-४७)। समय का वर्णन (६४-७४)। चार वर्ण और उनके कर्म (८७-९१)। आचार का वर्णन (१०८-१११)।	
२	धर्मतत्त्वविचारवर्णनम्—	१२
	धर्म का वर्णन और धर्म का स्वरूप (श्लोक १-१२)। अर्थ में और काम में जिसकी आसक्ति न हो वही धर्म को समझ सकते हैं और धर्म के जिज्ञासुओं को वेद से प्रमाण लेना चाहिये (३-१७)।	

अध्याय प्रधानविषय पृष्ठाङ्क

२ ब्रह्मचर्य वर्णनम्— १५

देश और परम्परा के अनुरूप आचार (१८)। द्विजातियों के संस्कार के समय का वर्णन; गर्भाधान से उपनयन तक दस संस्कार (२६-७७)।

२ कर्तव्याकर्तव्य वर्णनम्— २१

सन्ध्या और गायत्री का महत्त्व वर्णन (श्लोक १०१-१०४)। स्वाध्याय की विधि (१०७-११५)। विद्या का फल किस अधिकारी को होता है (१५६-१६२)। विद्यार्थी और ब्रह्मचारी केनियम (१७३-२२१)।

३ स्नातक विवाहकर्म वर्णनम्— ३५

विद्याभ्यास का काल (१-२)। विवाह का प्रकरण और कन्या के लक्षण (४-१६)। विवाह के भेद, राक्षस, आसुर, पेशाच और गान्धर्व चार असत् विवाह तथा ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य इन चार सद्विवाहों का वर्णन (२१-३६)। इनका विस्तार (४० तक)। पाणिग्रहण संस्कार सवर्णों के ही साथ होसकता है असवर्ण के साथ नहीं (४३)।

ऋतुकाल में सहवास करने से गृहस्थ होने पर भी ब्रह्मचारी संज्ञा (४५-५०)। स्त्री का सम्मान करने के लिये आर्य संस्कृति का विकास (५६-६२)।

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
३	गृहस्थस्य पञ्चमहायज्ञाः—	४१
	गृहस्थ के पञ्चयज्ञ का विधान (६८)। गृहस्थाश्रम की मान्यता (७८-८५)।	
३	बलिवैश्वदेवः—	४३
	बलिवैश्वदेव करनेकी विधि—	
३	अतिथि वर्णनम्—	४५
	अतिथि सत्कार की विधि (१०१-१०८)।	
	गृहस्थ के लिये अतिथि को खिलाकर भोजन करने का वर्णन (११५-११८)।	
३	श्राद्धवर्णनम्—	४६
	गोलक और कुण्डकादि निन्दित सन्तान (१७३-१७४)।	
	भोजन करने का नियम (२३८-२३९)।	
४	गृहस्थाश्रम वर्णनम्—	६१
	गृहस्थाश्रम का वर्णन (१)। श्राद्ध में और यज्ञ में कैसे ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिये (३०-३१)। उपनयन-संस्कार के अनन्तर स्नातक के रहन-सहन और व्यवहार के नियम (३५-११०)। विशेष नियम तथा गृहस्थ की शिक्षा (१११-१३५) धर्म का आचरण और नियम (१७७)। दान, धर्म और श्राद्ध (२६०)।	

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
५ अभक्ष्य वर्णनम्—		८५
	अकाल मृत्यु कैसे होती है (१-४) । अभक्ष्य (जिन चीजों का भोजन नहीं करना चाहिये उनका वर्णन (५-२०) । आमिष खाने का दोष (३४) ।	
५ भक्ष्याभक्ष्य वर्णनम्—		८६
	योऽस्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् । एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्विमुच्यते ॥ हिंसा का निषेध और आमिष खाने का पाप (४८-५०) । जो मांस नहीं खाता है उसको अश्वमेध का फल (५३-५४) ।	
५ प्रेत शुद्धि वर्णनम्—		९०
	अशौच (सूतक) (५८-७८) । सूतक में कोई काम न करने का वर्णन (८४) । जिन पर अशौच नहीं लगता है उनका वर्णन (९३-९५) ।	
५ द्रव्य शुद्धि वर्णनम्—		९५
	परम शुद्धि (१०६-१११) ।	
५ शरीर शुद्धि वर्णनम्—		९७
	अशुद्धि (१३३) । मार्जन से शुद्धि करने की विधि (३५) । जूठन से शुद्धि (१४०-१४१) ।	
५ स्त्रीधर्म वर्णनम्—		९९
	सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया । सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥ पतिव्रता स्त्रियों का साहात्म्य (१५४-१६६) ।	

अध्याय प्रधानविषय पृष्ठाङ्क

आयु के द्वितीय भाग यौवनावस्था ५० वर्ष की उम्र तक गृहस्थ में रहे (१६६) ।

६ वानप्रस्थाश्रम वर्णनम्— १०१

वानप्रस्थाश्रम जब पुत्र का पुत्र अर्थात् पौत्र हो जाय तब वन में निवास करे गृहस्थ में न रहे (१) । वानप्रस्थाश्रमी के नियम (२) । मुख्यन्न शाक-पात से हवन करने का निर्देश (५) । वानप्रस्थ के रहन-सहन के नियम (६-३२) । आयु के तृतीय भाग समाप्त कर सन्यासाश्रम की ओर लगने का निर्देश (३३) ।

६ सन्यासाश्रम वर्णनम्— १०४

सन्यास का विधान (४०) ।
गृहस्थाश्रम में न्याय धर्म से जीवन यापन की श्रेष्ठता (८६)
ब्राह्मण को सन्यास का धर्म (६६) ।

७ राज्यशासन धर्म वर्णनम्— ११०

राज्यसत्ता, शासन सत्ता का वर्णन, राजा अर्थात् शासक के आचरण का निर्देश (१८) । राजदण्ड की आवश्यकता (१६-२०) । शासक का विनयाधिकार (३५-४४) । शासक के दस कामज दोष और आठ क्रोध से उत्पन्न होनेवाले दोषों से बचने का निर्देश (४५-४७) । सचिवों की योग्यता और उनके साथ राज्यकार्य के परामर्श की विधि (५४) । राज दूत (६६) दुर्ग निर्माण (७०) । शत्रु से युद्ध का वर्णन (६०) । राष्ट्र-

राष्ट्र संग्रह और राष्ट्र निर्माण (११३-११७) । राज्य कार्य में लगे हुए मनुष्यों की वृत्ति का माप (१२४-१२६) । वाणिज्य कर, राज्यशासन नीति (१२७-२२६) ।

८ राज्यधर्म दण्डविधानवर्णनम्—

१३१

राजा को अपने सचिव वर्ग और मंत्री के साथ राजकाज देखने की विधि (२-३) । अट्टारह व्यवहार का वर्णन 'ऋणा-दानादि' (४-८) । व्यवहार में धर्म की रक्षा का ध्यान (१५) । मन की भावना के चिह्न (२६) । व्यवहार की जानकारी और साक्षी के चरित्र का वर्णन (४८-७५) ।

८ राजधर्म दण्डविधाने साक्षिवर्णनम्—

१३८

साक्षी के विशेष निर्देश (७५-६६) । असत्य साक्षिवाद का पाप पृथक् पृथक् स्थानों पर (६७-१०१) । वृथा शपथ करने से पाप (१०१-११८) । असत्य साक्षी के दण्ड का विधान (१२१-१२४) । राजा अपराधी को बिना दण्ड दिये छोड़ देने से राजा को नरक गमन ।

८ द्रव्यपरिमाणनिरूपण वर्णनम्—

१४३

तौल (माप) बनाने की विधि (१३२) । ऋण लेने पर व्याज की दर (१३६) । किसी वस्तु के रखने पर चक्रवृद्धि में वृद्धि का सन्तुलन (१५०) ।

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
८ राजधर्मदण्डविधान वर्णनम्—		१५५
जो कन्या नहीं है उसे कन्या कहकर विवाह करनेवाले को दण्ड (२२५-२२६) । पाणिग्रहण संस्कार कन्या का ही होता है स्त्री का नहीं (२२७-२२८) ।		
८ वेतन दण्ड वर्णनम्—		१५२
सीमादण्डवर्णनम्—		१५५
ग्राम सीमा का निर्णय (२६५) । वाक्पारुष्य (अपशब्द गाली देने) का व्यवहार (२६६) । दण्डपारुष्य (मार-पीट) के अपराध (२७८-३००) ।		
८ चौरदण्ड वर्णनम्—		१५६
स्तेन चोरी (३०१-३४४) ।		
८ राजधर्मदण्डविधान वर्णनम्—		१६२
परस्त्री गमन की परिभाषा (संग्रहण) (३५६) । परस्त्री गमन का दण्ड (३८६) । कर लगाना और तुला, तराजू, गज, बांटों का निरीक्षण (३६८ से समाप्ति तक) ।		
६ शक्तिस्वरूपा स्त्रीरक्षाधर्म वर्णनम्—		१६६
मातृ जाति शक्ति रूपा है इसे दृष्टिगत रखना पुरुष का प्रधान धर्म और कर्तव्य है । किसी भी रूप में शक्ति का हास अवा-		

च्छनीय है। स्त्री की रक्षा से धर्म और सन्तान की रक्षा होती है (१-३५)।

पुत्रं प्रत्युदितं सद्भिः पूर्वजैश्च महर्षिभिः ।
विश्वजन्यमिमं पुण्यमुपन्यासं निबोधत ॥
भर्तुः पुत्रं विजानन्ति श्रुति द्वैधं तु भर्तरि ।
आहुरुत्पादकं केचिदपरे क्षेत्रिणं विदुः ॥
क्षेत्रभूता स्मृता नारी बीजभूतः स्मृतः पुमान् ।
क्षेत्रबीजसमायोगात्संभवः सर्वदेहिनाम् ॥

६ स्त्रीधर्मपालन वर्णनम्—

१७३

नियोग का निर्णय (५८-६३)। नियोग उसका ही होगा जिसका वाक्य दान करने पर भावी पति स्वर्गत (मरजाय) हो जाय। विवाह में कन्या की अवस्था और वर की अवस्था का वर्णन और विवाह काल (६४-६६)। स्त्री-पुरुष धर्म का वर्णन (१०२-१०३) विवाह रति का धर्म बताया है।

६ दायभाग वर्णनम्—

१७६

दाय विभाग की सूची और दाय विभाजन का काल (१०४)।

६ सम्पत्तिश्राद्धयोरधिकारित्व वर्णनम्—

१८१

अपुत्रक का धन दौहित्र को (१३१)। कन्या को पुत्र समझकर धन देने का निश्चय होने के अनन्तर यदि औरस पुत्र हो जाय तो धन विभाग का निर्णय (१३४)।

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
६	पुत्रार्थ सम्पत्ति विभाग वर्णनम्—	१८३
	बारह प्रकार के पुत्रों के लक्षण । उनमें ६ दाय्याद और ६ अदायाद बताये हैं । (१५८-१८१) ।	
६	ऐश्वर्याधिकारिपुत्र वर्णनम्—	१८६
	दायधन के विभाजन के अवान्तर प्रकार संसृष्टि के धन का बँटवारा (१८२-२१५) ।	
६	अनेक दण्ड वर्णनम्—	१९०
	राजा को द्यूत कर्म करनेवाले को राष्ट्र से हटाने का वर्णन (२२०) । मन्त्री लोग जो भ्रष्टाचार करे शासक उनको निकाल कर दण्ड देवे (२३४) । महापाप चार हैं—ब्रह्म हत्या, गुरुतल्प-गमन, सुरापान और स्वर्ण स्तेयी (२३५) । पापों का वर्णन और प्रायश्चित्त (२३६) ।	
६	राजधर्म दण्ड वर्णनम्—	१९३
	प्रजा पालन से राजा को स्वर्ग प्राप्ति (२५६) । साहसिक (मारपीट करनेवाले) को दण्ड (२६७) ।	
	राज्ञः धर्मपालन वर्णनम्—	१९७
	कर लेने का समय (३०२) ।	

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
६	वर्णानां कर्मविधि वर्णनम्—	१६६
	ब्राह्मण क्षत्रिय दोनों की मिली जुली शक्ति राष्ट्र निर्माण कर सकती है (३२२) । शूद्र को अपने कार्य से ही मोक्ष (३३४) ।	
१०	वर्णानां भेदान्तर विवेक वर्णनम्—	२००
	वर्ण भेदान्तरेण त्वनेकवर्ण वर्णनम्—	२०१-
	स्त्री पुरुष के वर्ण भेद से सन्तान की भिन्न भिन्न जातियों का वर्णन अर्थात् अनुलोम सन्तान और प्रतिलोम सन्तान का वर्णन । अनुलोम और प्रतिलोम की वृत्ति का भी पृथक् वर्णन (१-६२) ।	
१०	चतुर्वर्णानां वृत्ति वर्णनम्—	२०६
	चातुर्वर्ण्य के लिये अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह मनु ने धर्म बताया है (६३) ।	
१०	वृत्ति जीविक वर्णनम्—	२०६
	वर्णधर्म,—यथा; ब्राह्मण का पढ़ना, पढ़ाना दान लेना व देना, यज्ञ करना कराना इत्यादि (७५) । इनके कार्य जाति विभागानुसार (७६ से समाप्ति पर्यन्त) ।	
११	धर्मप्रतिरूपक वर्णनम्—	२१३
	यज्ञ होम सोम यज्ञ के सम्बन्ध में स्नातकों का सम्मान ।	

अध्याय

प्रधानविषय

पृष्ठांक

प्रायश्चित्तों का यज्ञ के लिये धन एकत्र कर यज्ञ में न लगाने वाले की काक योनि इत्यादि में गति (१-२४) ।

११ देवादि धनं हरतीति फलम्—

२१५

यज्ञ का वर्णन, यज्ञ की दक्षिणा (३०) । जानकर पाप करनेवाले को प्रायश्चित्त अवश्य करना (४६) ।

११ स्तेयफल वर्णनम्—

२१७

चरी करनेवाले को पृथक् पृथक् पदार्थ के चोरी करने से शरीर में चिह्न होते हैं जैसे सुवर्ण चोर का दूसरे जन्म में कुनखी होना इत्यादि (४८) ।

११ प्रायश्चित्त वर्णनम्-अगम्यागमन वर्णनम्—२१८

महापाप आदि का प्रायश्चित्त (५५-१६०) ।

बालघाती, कृतघ्न शुद्ध नहीं होता (१६१) ।

११ प्रायश्चित्त वर्णनम्

२३१

सान्तपन व्रत, कृच्छ्र व्रत, चान्द्रायण आदि का वर्णन (२२३-२३१) ।

११ तपमहत्त्वफल वर्णनम्

२३४

तपस्या से पाप नाश (२४२) । अक्षर प्रणव को जप करने से सर्वपाप क्षय (२६६) ।

१२ कर्मणां शुभाशुभफल वर्णनम्--

२३७

वाचिक, शारीरिक और मानसिक कर्म का वर्णन (४-६) ।
वाणी के पाप से पक्षियों का जन्म, शरीर के पाप से स्थावर
योनि और मन के पाप से शारीरिक दुःख होते हैं ।

सत्त्व रजस् और तमस् तीन गुणों से नाना प्रकार के पाप
(२६) । इन तीनों गुणों का सामान्य जीवों में लक्षण (३४) ।
जिन कर्मों के करने से मनुष्य को सङ्कोच और लज्जा होती है
वह तमोगुण (३५) । जिस कर्म को करने से संसार में
ख्याति होती है उसे राजस् कहते हैं (३६) ।

तामसी कर्म की गति (४२-४४) । राजसी कर्म की गति
(४७) । सात्त्विक कर्म की गति (४८-४९) ।

१२ कृतकर्मफल वर्णनम्

२४२

ब्राह्मणत्व हरने से ब्रह्मराक्षस की गति (६०) । पृथक् पृथक्
वस्तुओं की चोरी करने से भिन्न भिन्न गति (६१) । चोरों को
असि पत्र आदि नरक के दुःख (७५) । प्रवृत्ति और निवृत्ति
कर्मों का वर्णन (८८) ।

१२ धर्मनिर्णय कर्तृक पुरुष वर्णनम्

२४६

स्वराज्य की यथार्थ परिभाषा (६१) । राज्य शासन, राष्ट्र
और सेना के शासन के लिये वेदधर्म की आवश्यकता

(६७-१००) ब्राह्मण को तपस्या और ब्रह्मविद्या से मोक्ष (१०४)। धर्म की व्यवस्था कौन दे सकता है (१०८)। दस हजार पुरुषों की तुलना में एक आत्मज्ञानी का अधिक मान्य है (११३)।

आत्म ज्ञान अध्यात्म जीवन का निरूपण (११६-१२६)।

नारदीय मनुस्मृति के प्रधान विषय

प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
व्यवहार दर्शन विधि:	२५०

मनु प्रजापति आदि जिस समय राज्य कर रहे थे उस समय सब सत्यवादी थे और जब धर्म का ह्रास हुआ तो नियन्त्रण के लिये व्यवहार की प्रतिष्ठा की गई। इसी के लिये राजा दण्ड नीति का धारण करनेवाला बनाया गया (१-२)। व्यवहार के निर्णय में साक्षी और लेख दो बातें रखी गईं। जब दो पक्षों में विवाद हो तो साक्षी और लेख का विधान हुआ (३-६) जितने प्रकार के व्यवहार और वाद-विवाद होते हैं उनका वर्णन (६-२०)। विवाद का मौलिक कारण काम क्रोध को बतलाया है (२१)। विवाद के निर्णय की विधि (२५-३२)। अर्थ शास्त्र और धर्मशास्त्र के बीच मतभेद होने में धर्मशास्त्र की मान्यता (३३-३४)। कोई भी सन्देह हो तो राजा द्वारा निर्णय कराये जाने का विधान (४०)। विनयन का प्रकार (४४-५०) लेख और गवाही (साक्षी) की सत्यता की जांच (५१-६४)।

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

राजा को व्यवहार के निर्णय में सहायता के लिये संसद (जूरी) का विधान (६८-७२) । सभासद (निर्णय सभा के) का नियम । ठीक बात को छिपाकर या बढ़ाकर बोलने का पाप (७३) । सभासद को बात बढ़ाने और छिपाने में पाप का संस्पर्श (७४) । सभा का वर्णन (८०) ।

ऋणादानं प्रथमं विवादपदम्

२५८

ऋण के सम्बन्ध में (१) । समय चले जाने पर भी पुत्र को बाप का ऋण चुका देना चाहिये (८-६) । स्त्री पति का ऋण नहीं देवे (१३) । जो जिसका धन लेनेवाला होता है उसे देना चाहिये (१४) । निर्धन, अपुत्री स्त्री को ले जानेवाले को उसके ऋण देना चाहिये (१६) । पुत्र पति के अभाव में राजा का अधिकार (२३) । पति के प्रेम से दी हुई वस्तु को कोई नहीं ले सकता है (२४) । कौन कुटुम्ब में स्वतन्त्र है और कौन परतन्त्र है इसका वर्णन (२६-३२) । छल से कमाये धन को काला धन कहते हैं (४३) । न्याय का धनागम (५०-५१) । प्रत्येक जाति की अपनी अपनी वृत्ति (५६-६४) । तीन प्रकारके लिखित, साक्षी, भोग का प्रमाण (६५-७७) । धरोहर का प्रमाण (७३) । स्त्रीधन के रक्षा का विवरण (७५) । मृत पुरुष का प्रमाण (८०-८६) । रुपये का वृद्धि (व्याज का प्रकार) चक्रवृद्धि का (Compound interest) वर्णन (८७-९४) । धनी को ऋणी का लेख बतलाना चाहिये (९८-१००) । प्रतिभू

पूधानविषय

पृष्ठाङ्क

(जामिन) का वर्णन (१०३) । लेख, लेखक के प्रकार, कितने प्रकार के होते हैं (११२-१२२) जो साक्षी के योग्य नहीं है— अशुद्ध साक्षी (१३४) । शुद्ध साक्षी । साक्षी विषय (१३५-१५२) । असाक्षी (१६३-१६७) । उभय पक्ष (जिसकी स्वीकृति को मान लेने पर) एक भी साक्षी हो सकता है (१७१) झूठे साक्षी के मुख के चिह्न, (आकार आदि चेष्टा से) (१७२-१७७) । झूठ साक्षी का पाप (१८६-१८८) । सत्य साक्षी का माहात्म्य (१९०-२००) । सत्य साक्षी की महिमा (२०३) । तम साक्षी के सम्बन्ध में (२१५) । शाप ऋषि और देवताओं पर भी लगता है (२१८) ।

उपनिधिकं द्वितीयं विवाद पदम्

२७८

औपनिधि निक्षेप का वर्णन (धरोहर) ।

सम्भूय समुत्थानं तृतीयं विवाद पदम्

२७९

सम्भूय समुत्थान (Partnership)

वाणिज्य व्यवसायी साझेदार होकर व्यापारादि करते हैं— उसे सम्भूय समुत्थान कहते हैं ।

दत्ताप्रदानिकं चतुर्थं विवाद पदम्

२८१

दत्ता प्रदानिक—जो नियम के विरुद्ध दिया है वह वापिस करने का निदान क्या अदेय क्या वापिस लेना । आपत्ति पर भी जो किसी को समर्पण कर दिया वह फिर नहीं दिया जाता (५) ।

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

अभ्युपेत्याशुश्रूषा पञ्चमं विवाद पदम्

२८२

शुश्रूषक ५ प्रकार, काम करनेवाले ४ प्रकार (२)। कर्म के भेद— शुद्ध कर्म करनेवाला (५)। आचार्य की शुश्रूषा आदि (१३-२३)। दास के प्रकार (२४-२६)। स्वामी के साथ उपकार करनेवाला दासत्व से छुटकारा पाता है (२८)। सन्यास से वापिस आने पर गृहस्थ में आने पर राजा का दास होकर छुटकारा नहीं है (३३)। बलान् दास बनाये हुए के छुटकारे का उपाय (३६)।

देतनस्यानपाकर्मा षष्ठं विवाद पदम्

२८६

बकरी भेड़ पालनेवाले अनुचरों पर विवाद (१४-१८)। अनुचित सहवास का दण्ड (१६-२३)।

अस्वामि विक्रयः सप्तमं विवादपदम्

२८८

जिस धन पर अधिकार नहीं है उसके बेचने के विषय में, पृथ्वी में जो धन गड़ा है उसपर अधिकार (१)। अस्वामि विक्रय धन चोरी के धन के तुल्य है (२)। चोरी का धन लेने वाला दण्ड का भागी (५)। पृथ्वी पर पड़ा या गड़ा धन राजा का होता है (६)।

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

विक्रीयासम्प्रदान मष्टमं विवादपदम्

२८६

बेचकर न देने का विवाद (१)। सौदा करके क्रेता को न देने से स्थायी सम्पत्ति में हानि देनी पड़ती है। जङ्गम वस्तु न देने से उसका जो लाभ हो सो क्रेता को देना पड़ता है (४)। सौदा करने के बाद मूल्य देने पर उपरोक्त नियम लागू होता है अन्यथा नहीं (१०)।

क्रीत्वानुशयो नवमं विवादपदम्

२६१

क्रेता खरीदने के पीछे ठीक न समझे तो उसी दिन वापिस देवे (१)। यदि दो दिन बाद वापिस दे तो ३० वां हिस्सा देवे अधिक दिन होने से उसका दूना देवे। चार दिन बाद वह सौदा खरीददार का होता है (३)। खरीददार गुण दोष भली प्रकार देखकर सौदा लेवे यह सौदा वापिस नहीं हो सकता (४) गाय को तीन दिन परीक्षा कर देखे, मोती हीरा इत्यादि ७ दिन, द्विपद १५ दिन, स्त्री १ माह और बीजों की १० दिन तक परीक्षा का नियम है। पहने हुए कपड़े वापिस नहीं हो सकते (५-८)। धातु लोहा सोना इत्यादि की अग्नि में परीक्षा सोना घटता नहीं, रजत दो पल घटता है, कासा शीशा आठ प्रतिशत, ताम्बा पांच प्रतिशत घटता है (१०)। जितना काटकर बेचा जाता है (१२-१३)। काषाय वस्त्र खरीदने का विषय (१५)।

समयस्यानपाकर्म दशमं विवादपदम्

२६२

समय का अनपाकरण (पाखण्डी से राजा बच कर रहे) [१]।

प्रवृत्ति भी हो तो भी बचना चाहिये (७) ।

क्षेत्रविवाद एकादश विवादपदम्

२६३

ग्राम्य सीमा का निर्णय तथा ग्राम के गोपालों तथा वृद्ध लोगों से सीमा का निर्णय (१-४) । सीमा के विषय में झूठ कहनेवाले को साहस का दण्ड (७-८) ।

पुल बनाने पर विचार (१४-१७) । कोई यदि किसी के बाहर जाने पर उसके खेत पर अधिकार करले तो लौटने पर उसे वापिस दे देवे (२०-२१) । खेत तीन पुस्त होने पर छूट नहीं सकता (२४) । किसी के खेत में गाय सो जाय उसका निर्णय (२७-२८) । हाथी घोड़े किसी के खेत में चले जायँ तो अपराध नहीं (२८-३०) । किसी के खेत में गाय चर जाय तो उसकी क्षतिपूर्ति निर्णय (३३-३४) ।

स्त्रीपुंसयोगो द्वादशं विवादपदम्

२६७

पाणिग्रहण होने पर स्त्री मानी जाती है (२-३) । एक गोत्र की कन्या और वर का विवाह नहीं हो सकता है [७] । गुण-दोष न देखकर विवाह होने पर त्याग [६-१५] । दूसरा पति करने का नियम [१६] । कन्यादान करनेवाले अधिकारियों का वर्णन [२०-२२] । स्त्री संग्रहण के दण्ड [६२-६८] । व्यभिचार दण्ड [७०-७५] । पशुयोनि गमन दण्ड [७६] । स्त्री गमन निषेध का वर्णन [८३-८८] । स्त्री की निर्वासन की दशा का वर्णन [९१-९५] । निर्दोष स्त्री त्याग का दण्ड [९७] ।

अध्याय

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

अन्य पति का विधान (६६-१००)। वर्णसंकर का वर्णन (१०५)। वर्णसंकरों की पृथक् पृथक् जाति (१०६-११८)।

दायविभागस्त्रयोदशं विवादपदम्

३०८

दाय विभाजन का समय (१-४)। जिस धन का विभाजन नहीं हो सकता है (६-७)। स्त्री धन का विवरण (८-६)। सम विभाग अविवाहिता बहिन का (१३)। पिता द्वारा विभाग की मान्यता (१५-१६)। जो लोग पैतृक धन के अनधिकारी हैं (२०-२१)। सम्मिलित कुटुम्ब के भाइयों का विभाग (२३-२५)। स्त्रियों की रक्षा का विधान (३१-३२)। असंस्कृत कन्या का पितृ-धन से सत्कार (३३)। एक साथ रहनेवाले भाई एक दूसरे के साक्षी नहीं होते हैं (३६)। वारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन (४२-४५)। पुत्राभाव में कन्या का अधिकार (४७)।

साहसं चतुर्दशं विवादपदम्

३१३

तीन प्रकार के साहस (२)। उत्तम साहस (५)। उत्तम साहस का वध, सर्वस्व हरण (७)। महा साहसी का दण्ड (६)। चोरी (११)। चुराई हुई वस्तु का वर्णन (१२-२०)।

वाग्दण्डपारुष्यं पञ्चदशं षोडशञ्च विवादपदम् ३१५

वाक्पारुष्य दण्डपारुष्य (भद्दी गाली और अश्लील) तीन

अध्याय

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

प्रकार का दण्ड (१-३) । दूसरे पर पत्थर फेंकना दण्ड पारुष्य (४) । दण्ड पारुष्य का दण्ड (५-१३) । जाति परत्व दण्ड का तारतम्य (१४-१७) । जिस अङ्ग द्वारा पाप हुआ उसका छेदन (२३-२४) । दण्ड पारुष्य में अपराधी को दण्ड (२५-२७) ।

द्युतसमान्हयं सप्तदशं विवादपदम्

३१८

जूआ की परिभाषा (१) । जूआ खेलने के अभियोग में साक्षियों का वर्णन (४) । मिथ्या साक्षिकों को दण्ड (५-६) ।

प्रकीर्णकमष्टादशं विवादपदम्

३१९

प्रकीर्ण विवाद की परिभाषा (१-४) । शास्त्र निषिद्ध मार्गगामी को दण्ड (७) । अन्याय से व्यवस्था की हुई का राजा द्वारा भंग (८-९) । राजा द्वारा सर्वस्वहरण पर आजीविका त्याग (१२) । राजा के दण्ड न देने पर क्षति (१६-१७) । दण्ड देने से राजा निर्दोष (१८) । राजा की महिमा और आज्ञा पालन (२०-३०) । राजा का धर्म (४७-४८) । माङ्गलिक आठ चीजों का वर्णन (५१) । उनकी प्रदक्षिणा का वर्णन (५२) । प्रगट अ-प्रगट चोरों का वर्णन (५३-५८) । चारों चोरों को दण्ड

(६०-६४) । चोरों के सहवासियों को दण्ड (७०-७५) ।
भिन्न-भिन्न प्रकार की चोरी का दण्ड (७६, ६०) । जिस
जिस अङ्ग द्वारा चोरी उसका छेदन (६२) । आघात
करने को शरीर के स्थान (६४-६५) । ब्राह्मण को फांसी
नहीं लगाना और देश से बहिष्कृत करना (६६) । दुष्टों
को दण्ड और अङ्गों पर निशान (१०१-१०६) । गुप्त
पापों का यमराज द्वारा दण्ड (१०८) । दण्डों का प्रकार
(१११) । अर्थदण्ड के मान की व्यवस्था (११८) ।

दिव्य प्रकरणम्

३३०

पांच प्रकार के दिव्यों का वर्णन (२) । सत्य असत्य (३) ।
तुला वर्णन (४) । तुला निर्णय (५-८) । तुला का
विषय (६, २१) । जल परीक्षा (२१, ३१) । विष
परीक्षा (३२, ३८) । विष पान का वर्णन (३६, ४५) ।
विशेष—नारदी-स्मृति में अध्यायक्रम नहीं रहने से प्रकरण ही
लिखा गया है ।

अत्रिस्मृति के प्रधान विषय

१ आत्मशुद्धिवर्णनम्

३३६

अत्रि के प्रति पाप मुक्त्यर्थ ऋषियों का प्रश्न (१-३) ।
प्राणायाम विधि उससे लाभ (४-१०) । गायत्री मन्त्र
प्रणव-विधान (१५) ।

- | अध्याय | प्रधानविषय | पृष्ठाङ्क |
|--|--|-----------|
| २ | सर्वपाप विमुक्तिः, गायत्रीमन्त्रवर्णनञ्च | ३३८ |
| <p>मन, वाणी और कर्म से किये हुए पापों की मुक्ति (१-३) ।
 कुष्माण्डसूक्त आदि से पापों का शोधन (४-६) । अघ-
 मर्षण सूक्त से स्नान (८) । उपांशु जप माहात्म्य (१०-११) ।
 गायत्री जप माहात्म्य (१२-१६) ।</p> | | |
| ३ | पूर्वाध्यायरूपं, सर्वपाप प्रायश्चित्तम् | ३३६ |
| <p>वेदाभ्यास का माहात्म्य (१-६) । पुराण, इतिहास का माहात्म्य
 (७-८) । शतरुद्री आदि सूक्तों का माहात्म्य (९-१५) ।
 दान माहात्म्य (१६-१७) । सुवर्ण, तिलादि दान माहात्म्य
 (१८-२३) ।</p> | | |
| ४ | रहस्यपाप प्रायश्चित्तमगम्यागमन प्रायश्चित्तञ्च | ३४२ |
| <p>रहस्य पापों का प्रक्षालन (१-१०) ।</p> | | |
| ५ | विविध प्रकरण वर्णनम् | ३४४ |
| <p>भोजन के समय मण्डल का विधान (१-३) । अन्न देने
 के अधिकारियों का वर्णन (४) । भोज्यान्न के भिन्न-
 भिन्न अधिकारियों का वर्णन (५-१७) । भोजन और
 जलपान का नियम (२०-२३) । भोजन के समय पाद-</p> | | |

अध्याय

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

प्रक्षालन (२५)। भोजन के नियम (२६-२८)। सूतक स्नान विधि (३२-३३)। शुद्धि विधान (३८)। सूतक दिन निर्णय (४१-४२)। सूतक के विषय में वर्णन (४३-४६)। कन्या ऋतुमती होने पर शुद्धि विधान (४७-५०)। जन्म के दिन ग्रहण होने पर पूजा विधि (५१-५५)।

स्वर्गसुख प्राप्ति फलवर्णनम्

३५१

दान से स्वर्ग गति की प्राप्ति (१-५)।

अत्रिसंहिता के प्रधान विषय

धर्मशास्त्रोपदेश वर्णनम्

३५२

संहिता श्रवण माहात्म्य (१-७)। गुरु के सत्कार न करने से कुम्भकुर्योनि प्राप्ति (१०)। शास्त्र अपमान से पशुयोनि (११)। स्वकर्तव्यनिष्ठ की प्रशंसा (१२)। प्रत्येक वर्ण के कर्म (१३-२०)। विद्वानों के कार्य में मूर्खों की नियुक्ति करने पर क्षति (२३)। विद्वत्पूजा वर्णन (२७)। राजा के पञ्च यज्ञ—दुष्ट को दण्ड, सज्जन पूजा, न्याय से कोष वृद्धि, निष्पक्ष न्याय, राष्ट्र वृद्धि (२८)। शौच लक्षण (३१-३५)। ब्राह्मण कर्तव्य (३६-३६)। दान माहात्म्य (४०-४१)। इष्टापूर्ति के लक्षण (४३-४४)।

नियम की अपेक्षा यम का सेवन (४७) । नियम (४६) ।
 जिनको उद्देश्यकर स्नान किया जाता है उसका फल (५०-५१) ।
 पुत्र को पिता का गया श्राद्ध करना चाहिये, गया श्राद्ध का
 माहात्म्य (५२-५८) । आहार शुद्धि, स्थान शुद्धि, वस्त्र
 शुद्धि आदि का निर्देश (५६-८१) । सूतक आशौच आदि का
 प्रायश्चित्त (८३-१११) । कृच्छ्र, सान्तपन, चान्द्रायण व्रत
 का विधान (१११-१३५) । स्त्री को जप व्रत का निषेध
 केवल पति परायणता (१३५-१३८) । लोह पात्र में भोजन
 करने से पतित । (१५२) ।
 भिक्षुक की परिभाषा (१६५) । महापातकियों की गणना
 (१६६) ।

शुद्धिप्रकरणम्

३६७

विभिन्न पापों का प्रायश्चित्त और शुद्धि का पृथक् वर्णन
 (१६७-२०८) ।

शुद्धिस्पर्शादि प्रायश्चित्तम्

३७१

कृच्छ्र व्रत और शौच के विभिन्न प्रकार (२०६-२२६) ।

प्रायश्चित्तम्

३७३

चाण्डाल का जल पीने से पञ्चगव्य से शुद्धि (२३२) । जल
 शुद्धि का वर्णन (२३७) ।

प्रायश्चित्तवर्णनम्

३७४

रजस्वला स्पर्श, भिन्न-भिन्न पापों का प्रायश्चित्त एवं अशौच वर्णन (२३८-२८०)। स्पर्शास्पर्श एवं उच्छिष्ट भोजन का वर्णन (२८२-२९०)। पतित अन्न भक्षण, चाण्डाल अन्न, कन्या अन्न, राजान्न भक्षण का दोष वर्णन [२९१-३०५]। श्राद्ध में भोजन शुद्धि वर्णन [३०६-३१०]। अङ्गुली से दतौन का निषेध [३१४]। शौच, मैथुन, स्नान, भोजन में मौन रखना [३२१]।

दान फल वर्णनम्

३८२

उर्ध्वमुखी गोदान का माहात्म्य (३३१) विद्यादान का माहात्म्य [३३७-३३८]। दानपात्र का वर्णन [३३९-३४१]।

श्राद्धफलवर्णनम्

३८४

श्राद्ध में भोजन कराने योग्य ब्राह्मणों का वर्णन [३४२-३५४] पुत्र द्वारा पिता का श्राद्ध करने का माहात्म्य, न करने से पाप [३५५-३६०]। श्राद्ध माहात्म्य एवं श्राद्ध का समय [३६१-३६८]।

निन्द्यब्राह्मण वर्जनवर्णनम्

३८६

ब्राह्मण की संज्ञा देव ब्राह्मण, विप्र ब्राह्मण, शूद्र ब्राह्मण आदि

अध्याय

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

म्लेच्छ ब्राह्मण, विप्र चाण्डाल [३७२-३८०]। श्राद्ध में वर्ज्य ब्राह्मण [३८४]। विद्वान् होने पर भी पतित ब्राह्मण की पूजा नहीं की जाती है [३८५-३८६]। खरीदी हुई स्त्री के पुत्र श्राद्ध करने योग्य नहीं होते हैं [३८७]।

धर्मफलवर्णनम्

३८८

दीपक की छाया, बकरी की धूलि की शुद्धि [३९०]। स्नान के स्थानों का वर्णन [३९१]। पिण्डदान के स्थान एवं समय का वर्णन [३९४]। अत्रि संहिता का महात्म्य [३९५]। विशेष—इस संहिता में भी नारदी-स्मृति की तरह छोटे छोटे प्रकरण हैं।

प्रथम विष्णुस्मृति के प्रधान विषय

१ शौनकप्रति राज्ञः प्रश्नोक्तिः, शौनकस्योत्तरम् ३८९

शौनक के प्रति ऋषियों का प्रश्न कि अन्तकाल में ध्यान करने से मोक्ष होता है [१-३]।

युधिष्ठिरस्य पितामहं प्रति प्रश्नः, भीष्मस्य पुरातन वार्ताकथनमोङ्कारवर्णनं, विष्णोः प्रसादन विधि वर्णनम्, ईश्वरवर्णनम्, वरप्राप्तिवर्णनम्, नारायणवर्णनञ्च

३९१

भीष्म के प्रश्न पर विष्णु भगवान् का उत्तर, नारायण नाम

का माहात्म्य [४-६८] । द्वादशाक्षर मन्त्र का माहात्म्य [१००-१११] ।

विष्णुस्मृति के प्रधान विषय—

- १ सृष्ट्युत्पत्तिवर्णनम् ४०१
ब्रह्मा की उत्पत्ति से सृष्टि रचना, वराह द्वारा पृथिवी का उद्धार, देव आदि का सृजन, जब विष्णु अन्तर्धान हो गये तब कश्यप से पृथिवी ने पूछा मेरी गति क्या होगी ? पृथिवी द्वारा विष्णुस्तुति ।
- २ सवर्णाश्रम वृत्तिधर्म वर्णनम् ४०७
वर्णाश्रम की रचना उनके मन्त्रों द्वारा श्मशान तक की क्रिया, वृत्ति, जाति पर विचार ।
- ३ राजधर्म वर्णनम् ४०८
राजधर्म, ब्राह्मणों से कर नहीं लेने का वर्णन ।
- ४ राजधर्म वर्मनम् ४१२
प्रजा सुख से सुखी और दुःख से दुखी रहने से राजा को स्वर्ग प्राप्ति ।

५ राजधर्मविधाने दण्डवर्णनम्

४१३

महापातक और उनके दण्ड का वर्णन, पापियों दण्ड का वर्णन और दूसरी योनि का वर्णन, विवाद का वर्णन और कूट साक्षियों का वर्णन, तीन पुस्त तक भोगने पर जगह का वर्णन, चोर, परस्त्रीगामी, लम्पट जिसके राज्य में न हों उस राजा का इन्द्रत्व वर्णन ।

६ ऋणदान वर्णनम्

४२१

ऋणो धनी का व्यवहार और उसकी व्यवस्था का वर्णन, स्वर्ण की द्विगुण की वृद्धि, अन्न की त्रिगुण की वृद्धि इनके निर्णय शास्त्र साक्षी । सम्पत्ति लेनेवाले को ऋणदान आवश्यक ।

७ सलेखसाक्षिवर्णनम्

४२३

लिखित का वर्णन, राज साक्षी, गवाही, असाक्षिक वर्णन, संदेहास्पद लेख का निर्णय ।

८ वर्जितसाक्षिलक्षणवर्णनम्

४२४

जो साक्षी में निषेध हैं उनका वर्णन, कूट साक्षियों का वर्णन, शुद्ध साक्षियों के कहने पर निर्णय करना । जिस विवाद में कूट साक्षी होना निश्चित हो जाय वह विवाद समाप्त कर देना ।

६ समयक्रियावर्णनम्

४२६

समय क्रिया राजद्रोहादि में शपथ कराने का विवरण, अभियुक्त को दिव्य कराने की प्रक्रिया, सचैल खान कराकर तब देवता और ब्राह्मण के आगे शपथ करावे ।

१० घट (तुला) धर्म वर्णनम्

४२७

घट या तुला—इसमें पुरुष को बिठावे और उससे यह कह-लावे कि ब्रह्म हत्यारे को झूठी गवाही देने में जो नरक होते हैं वह इस तुला में बढ़ इस तरह नीचे के श्लोकों में उसके प्रार्थना के मन्त्र बोले । यदि तुला में तौल बढ़ जावे तो उसको सच्चा समझे, यदि घट जावे तो उसे झूठा समझे ।

११ अग्निपरीक्षा वर्णनम्

४२८

अग्नि परीक्षा—सोलह अङ्गुल के सात मंडल बनावे और उन मंडलों को दो हाथ के सूत्रों से वेष्टित कर देवे । पचास पल के लोहे को आग में गरम करके उसे हाथ में लेकर सात मंडलों पर चले फिर लोहे को नीचे रख देवे । जिसका हाथ न जले वह अनपराधी यदि जल जावे तो अपराधी—इसके नीचे अग्नि के मन्त्र लिखे हैं ।

१२ उदकपरीक्षावर्णनम्

४३०

उदक [जल में परीक्षा]—वहां पर एक आदमी धनुष से एक तीर पानी में डाले। वह आदमी कूदकर उस तीर को लावे। जो पानी के नीचे न दिखलाई देवे वह शुद्ध, जो दिखाई दे वह अशुद्ध और मन्त्र वहीं लिखे हैं।

१३ विषपरीक्षा वर्णनम्

४३१

विष की परीक्षा—हिमालय के विष को सात जौ के बरानर घी में भिगो कर उसे दिखलावे। जिस पर जहर न चढ़े उसे शुद्ध। इसके प्रकरण में प्रार्थना के मन्त्र लिखे हैं।

१४ कोषप्रकरण वर्णनम्

४३१

कोषमान—किसी उग्र देवता के स्नान का उदक तीन अब्जुली वह पीवे। दो तीन सप्ताह तक उसके घर में कोई रोग, मरण हो जाय तो उसे अशुद्ध समझे। इसके प्रकरण में प्रार्थना के मन्त्र लिखे हैं।

१५ द्वादश पुत्र वर्णनम्

४३२

बारह प्रकार के पुत्र—सबसे पहिले, औरस, क्षेत्रज, पुत्रिका पुत्र, भाई और पिता के न होने पर लड़की, पुनर्भव, काशीन,

गूढोत्पन्न, सहोद, दत्तक, क्रीत, स्वयं उपागत, अपविद्ध, परित्यक्त ये बारह प्रकार के पुत्र वतलाए गये हैं। इस अध्याय के अन्तिम श्लोकों में वतलाया है कि पुत्रात्म नरक से जो पिता को बचाता है उसे पुत्र कहते हैं।

१६ जातिवशात्पुत्रभेदवर्णनम्

४३४

समान वर्णों से जो पुत्र होते हैं वही पुत्र कहे जाते हैं। अब अनुलोम जो माता के वर्ण से प्रतिलोम ये अनार्य लड़के कहे जाते हैं। उनकी संज्ञा और संकर जाति का विवरण।

१७ पुत्राभावे सम्पत्ति विभाग (ग्राह्य) वर्णनम् ४३४

विभाग—अगर पिता विभाग करे तो अपनी इच्छा से कर सकता है। सभी उपार्जित का विभाग करे और पति के विभाग में स्त्री का पूर्ण अधिकार है।

ब्राह्मणस्य चातुर्वर्णेषु जातपुत्राणां दायविभाग वर्णनम् ४३६

ब्राह्मण का चारों वर्णों में विवाह होता है और जो बटवारे का कहा गया है वह विभाग वतलाया गया है।

१८ शवस्पर्शी (दाहसंस्कारार्थ) पुत्र वर्णनम् ४३८

ब्राह्मण के अग्निदाह का निर्णय किया है।

अध्याय प्रधानविषय पृष्ठाङ्क

२० दिनरात्रिकालवर्षादीनां वर्णनम् ४३६

देवताओं का उत्तरायण दिन, दक्षिणायन रात्रि है। सम्बत्सर अहोरात्रि है इस प्रकार काल का विभाग बताकर कर्म विपाक बताया गया है और पितृ क्रिया बताई गई है।

२१ अशौचानन्तरं श्राद्धादि वर्णनम् ४४३

अशौच पूरा होने पर पितृ और अग्निहोत्र वार्षिक श्राद्ध, कुम्भदान आदि का विवरण है।

२२ अशौच निर्णय वर्णनम्— ४४४

अशौच किस जाति का कितने दिन का होता है। किसी का दस दिन का किसी का बारह दिन का।

२३ अन्नद्रव्यादि शुद्धिवर्णनम्— ४४६

वर्तन और अन्नादि की शुद्धि के सम्बन्ध तथा कूप आदि के शुद्धि के विषय—इसमें गाय के सींग का जल और पञ्चगव्य से अन्न में शुद्धि बताई है।

२४ विवाह वर्णनम्— ४५३

ब्राह्मण को चार जाति से विवाह, क्षत्रिय को तीन, वैश्य को दो, शूद्र को एक जाति से विवाह बतलाया है। सगोत्र से

विवाह का निषेध । माता से पंचम और पिता से सप्तम कुल में विवाहग्राह्य है । स्त्री के लक्षण और आठ प्रकार के विवाह । अन्तिम में ब्राह्म विवाह का माहात्म्य ।

२५ स्त्रीणां संक्षिप्तधर्म वर्णनम्—

४५५

इसमें संक्षिप्त से स्त्रियों के धर्म बताये हैं ।

२६ अनेक पत्नीत्वे सति स्वधर्माद्यस्त्री प्राधान्य वर्णनम्—

४५६

जिसकी सवर्णा बहुभार्या हो तो वह धर्म काम ज्येष्ठ पत्नी से करे । हीन जाति की स्त्री से विवाह करने पर उससे उत्पन्न लड़के से दैव कार्य और पितृकार्य नहीं हो सकता ।

२७ निषेकादुपनयनपर्यन्तदशसंस्कारवर्णनम्—

४५७

गर्भाधान, पुंसवन संस्कार आदि का वर्णन— उपनयन ब्राह्मण को आठवें, क्षत्रिय को ग्यारहवें और वैश्य को बारहवें वर्ष में करना चाहिये ।

२८ गुरुकुले वसन् ब्रह्मचारिणां सदाचार वर्णनम्—

४५८

इसमें ब्रह्मचारी के नियम, गुरुकुल में रहना, गुरु की आज्ञा पर चलना, वेदों को पढ़ना इत्यादि वर्णन किया गया है ।

अध्याय

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

२६ आचार्य (गुरु) कर्तव्यता विधान वर्णनम्— ४६०

इसमें आचार्य, ऋत्विक् के कर्तव्यों का वर्णन है।

३० वेदाध्ययनेऽनध्यायादि वर्णनम्— ४६१

इसमें श्रावण महीने में उपाकर्म करने का विधान और अन्त में उपाकर्म करने का और शिष्य को उत्पन्न करनेवाले पिता से दीक्षा देनेवाले गुरु का विशेष महत्त्व और शिष्य के लिये आमरण गुरु सेवा का निर्देश है।

३१ मातापितृ गुरुणाम् शुश्रूषा विधान वर्णनम्— ४६३

मनुष्य के तीन अति गुरु होते हैं। माता, पिता, आचार्य इनकी नित्य सेवा और उनकी आज्ञापालन का वर्णन है।

३२ राजा-ऋत्विक्-अधर्मप्रतिषेधी-उपाध्याय-पितृ-
व्यादीनामाचार्यवद्व्यवहारवर्णनम्, तेषां पत्न्यो-

ऽपि मातृवत् माननीयास्तच्छ्रुतिः— ४६४

राजा, ऋत्विक्, उपाध्याय, चाचा, ताऊ, मामा, नाना, श्वशुर और ज्येष्ठ भ्राता इनका सम्मान करना चाहिये। अन्त में बतलाया है कि ये क्रम से विद्या, कर्म, अवस्था, बन्धुत्व, धन इनके मान के स्थान हैं।

अध्याय प्रधानविषय पृष्ठाङ्क

३३ पुंसां के ते शत्रव स्तद्विचार वर्णनम्— ४६६

काम, क्रोध, लोभ ये तीन मनुष्य के शत्रु हैं और नरक के द्वार बताये गये हैं ।

३४ मात्रादि गमन पातक परामर्श वर्णनम्— ४६६

मातृ गमन, दुहिता गमन, स्वसा गमन करनेवाले अति पातकी होते हैं । उन्हें आग में जलाना चाहिये ।

३५ महापातक परामर्श वर्णनम्— ४६७

महापातक—ब्रह्महत्या, सुरापान, सुवर्ण चोरी और गुरुद्वार गमन और एक वर्ष तक इनके साथ रहता है इनका वर्णन है

३६ के ते ब्रह्महत्या समाः पातकाः— ४६७

इसमें झूठी गवाही देनेवाला, गर्भघाती आदि के पाप बतलाये हैं । जो महापातक के समान पाप होते हैं वे बतलाये हैं ।

३७ उपपातक वर्णनम्— ४६८

उपपातक—झूठा कहना, वेदों की और गुरु की निन्दा सुनना इत्यादि उपपात बतलाये हैं ।

३८ सकर्तव्यता जातिभ्रंशकरण प्रायश्चित्त वर्णनम् ४६९

जातिभ्रंशकरण—जैसे पशु में मैथुन करना इत्यादि ।

३६ जीवहिंसाकरणे (संकरीकरणे) दोषस्तत्

प्रायश्चित्त वर्णनम्—

४७०

संकरी करण—गांव के पशु आदि की हिंसा ।

४० अपात्रीकरण (आदानपात्रं) तद्वर्णनम् ।

४७०

अपात्रीकरण नीच आदमियों से धन, दान लेना और चक्रवृद्धि आदि से रुपया लेना ।

४१ मलिनीकरणं तत्प्रशमनवर्णनम्—

४७०

मलिनीकरण के पाप—पक्षी आदियों को मारना ।

४२ अकर्तव्या विषये (प्रकीर्ण) प्रायश्चित्त वर्णनम् ४७१

ब्राह्मण (ब्रह्म नैष्ठिक) के आज्ञा से प्रकीर्ण पातक बड़ा या छोटा जो हो सो प्रायश्चित्त करे ।

४३ नरकाणां संज्ञा तेषां वर्णनम्—

४७१

नरक, तामिस्र, अन्धतामिस्रादि—जो पाप करके प्रायश्चित्त नहीं करते उन्हें मरने के बाद इस नरक में जाना पड़ता है ।

४४ नरकस्थानां यमयातना निर्णयः—

४७३

पापी आदमियों को नरक जाने के अनन्तर तिर्यग्

योनि, अति पातकों को स्थावर, और महापातकी को कृमि, उपपातकी को जलज योनि और जातिभ्रंश को जलचर योनि इत्यादि । जो दूसरे के द्रव्य को हरण करता है उसे अवश्य सर्प की योनि प्राप्त होती है ।

४५ नरकोत्तीर्ण तिर्यग्योन्योर्मनुष्ययोनि वर्णनम्— ४७४

पापकर्मणां कर्मविषाकेन मनुष्याणां लक्षणानि

(चिन्ह) वर्णनम्—

४७५

नरक भोगने के बाद और तिर्यक् योनि भोगने के बाद जब मनुष्य योनि में आता है तो उसके क्या निशान है । यथा— अतिपातकी कुष्ठी, ब्रह्महत्यारा यक्षमारोगी, गुरुपत्नी गामी दुष्कर रोग से ग्रसित रहते हैं ।

४६ कृच्छ्रादि वृत्तविधान वर्णनम्—

४७६

कृच्छ्रव्रत—तीन दिन तक भोजन नहीं करना । सिरसे स्नान करना इसी तरह पर प्राजापत्य—तप्तकृच्छ्र, शीतकृच्छ्र, कृच्छ्रातिकृच्छ्र, उदककृच्छ्र, मूलकृच्छ्र, श्रीफलकृच्छ्र, पराक, सान्तपन, महासान्तपन, अति सान्तपन, पर्णकृच्छ्र— इनका विधान आया है ।

४७ चान्द्रायण व्रतवर्णनम् ग्रासार्थान्न निर्णय वर्णनञ्च ४७७

चान्द्रायणके विधान—इसमें यति चान्द्रायण और सामान्य चान्द्रायणादि का वर्णन आया है।

४८ अन्नदोषार्थं यवेन प्रायश्चित्तम्— ४७८

अपने लिये यव भिगो कर उसकी तीन अंजुली पीवे उससे वेश्या का अन्न, शूद्र के अन्न का दोष हट जाता है।

४९ मार्गशीर्षशुक्लैकादश्युपाख्यान वर्णनं, सर्वपाप निवृत्त्यर्थं वासुदेवार्चन वर्णनञ्च--- ४७९

ये पाप के दूर करने के सम्बन्ध में कहा गया है। मार्गशीर्ष शुक्ल ११ में उपवास कर १२ में भगवान् वासुदेव का पूजन पुष्प, धूप आदि से करे। तथा ब्राह्मण भोजन, एक साल तक व्रत करने से पाप नष्ट हो जाते हैं। एकादशी व्रत करने से बहुत पाप नष्ट हो जाते हैं। श्रवण नक्षत्र युक्त एकादशी वा पूर्णिमा को एक वर्ष तक व्रत करने से पाप नष्ट हो जाते हैं।

५० ब्रह्म, गोवधादि प्रायश्चित्तार्थ-वने पर्णकुटी विधान वर्णनम्— ४८०

व्रत का वर्णन—वन में भोपड़ी बनावे और तीन बार स्नान

11264

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

करे और ग्राम-ग्राम में भोख मांगे और घास पर सोवे तथा अपने पाप को कहता जावे। रजस्वला आदि गमन स्त्री पाप आदि नष्ट हो जाते हैं। फल के वृक्षादि, गुल्मादि काटने के पाप भी इस व्रत से नष्ट हो जाते हैं।

५१ सुरापः सर्वकर्मस्वनर्हः मद्यमांसादि निषेधं तच्च-

सर्व प्रायश्चित्तवर्णनम्—

४८२

सुरापान करनेवाला किसी कार्य को या मातृ-पितृ श्राद्ध कर वह एक वर्ष तक कर्णों को खावे एवं चान्द्रायण व्रत करे। प्याज लहसुन, वानर, खर उष्ट्र, गोमांस के भक्षण करने पर भी वही व्रत है। द्विजातियों को इस व्रत के पश्चात् फिर संस्कार करें। शुष्क मांस के खाने पर भी उपरोक्त व्रत करे। अभक्ष्य भक्षण करने से जो पाप होते हैं वे सभी इसी व्रत से नष्ट हो जाते हैं।

५२ स्वर्णस्तेयिनां तथान्यान्य द्रव्य हर्तॄणां प्रायश्चित्त

वर्णनम्—

४८७

सुवर्ण चोरी तथा अन्यान्य द्रव्य चोरी के प्रायश्चित्त का वर्णन है।

५३ अगम्यागमने दोषनिरूपणं प्रायश्चित्त वर्णनम्—४८८

अगम्या-गम्य के विषय में प्रायश्चित्त बतलाया है।

अध्याय

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

५४ यः पापात्मा येन सह युज्यते तत्प्रायश्चित्त

वर्णनम्—

४८६

जो जिस पापी के साथ रहता है उसे भी वही प्रायश्चित्त बतलाया है ।

५५ रहस्य प्रायश्चित्त विधान वर्णनम्—

४८२

रहस्य पापों का प्रायश्चित्त, प्रणव का जप, हविष्यांग और प्राणायामादि बतलाया है ।

५६ वेदोद्धृतपवित्र मन्त्र वर्णनम्—

४६४

इसमें जप, होम, अघमर्षण, नारायणी सूक्त और पुरुषसूक्त इत्यादि का महात्म्य बतलाया गया है ।

५७ अभोज्याप्रतिग्राह्योस्त्याज्य वर्णनम्—

४६४

इस में त्याज्य मनुष्यों का निर्देश, त्याज्य पुरुषों से दान लेने से ब्राह्मणों का तेज नष्ट हो जाता है ।

५८ गृहस्थाश्रमिणस्त्रिविधोऽर्थोपार्जन वर्णनम्—

४६५

इसमें गृहस्थी के तीन प्रकार के अर्थ बतलाये हैं । शुल्क सबल और असित्त, जो अपनी वृत्ति से धनोपार्जन करते हैं उन्हें शुल्क, दूसरों को ठगकर अपना व्यापार करते हैं उन्हें

सबल, तीसरे रिश्त और सट्टा आदि से रोजगार करनेवाले और व्याज खानेवाले को असित कहते हैं। जिस तरह जो रुपया आता है उसकी गति वैसी ही होती है।

५६ गृहस्थाश्रमिणां कर्तव्यमग्निहोत्रञ्च वर्णनम्— ४६६

गृहस्थाश्रमी नित्य हवन करे इस तरह लिखे हुए आचार के अनुसार हवन करनेवाले की प्रशंसा की गई है।

६० सर्वेषां नित्यशौच ब्राह्ममुहूर्तादि कृत्यवर्णनम्—४६८

६१ दन्तधावन प्रकरण वर्णनम्--- ४६९

६२ द्विजातीनां प्राजापत्यादि तीर्थ वर्णनम्— ५००

६३ योगकर्म विधानम्-ईश्वरप्राप्तिः, यात्रा प्रकरणे-

दृष्टादृष्ट वर्णनम्--- ५००

६४ स्नानाद्याचार कृत्य वर्णनम्--- ५०२

६५ स्नानान्तर कर्तव्यता-देवपूजावर्णनम्--- ५०४

६६ देवपितृकर्म विधानं, तत्कर्मणि त्याज्य वर्णनञ्च ५०५

६७ अग्निस्थापनमतिथ्याद्यनेक विचार वर्णनम् ५०६

६८ चन्द्रसूर्योपरागेकर्तव्यता-त्वनेक प्रकरणे त्याज्य-

वर्णनम् ५०६

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
६६	स्वस्त्रियामपि गमने निषेध तिथिः-शयन विचार वर्णनश्च---	५१०
७०	शयनाद्यनेक विवेक वर्णनम्---	५११
७१	केन सह निवासो न कर्तव्यः, आचार विषयश्च वर्णनम्—	५११
अध्याय ६० से ७१ तक गृहस्थाश्रमी के प्रत्येक दैनिक और पर्व के, घर के उत्सव के, जीवन यात्रा के, आचार, सदाचार, व्यवहार की शिक्षा दी गई है वे सब पढ़ने योग्य हैं।		
७२	दमः (इन्द्रिय निग्रहः) वर्णनम्---	५१४
७३	श्राद्धवर्णनम्---	५१४
७४	अष्टका श्राद्ध विधि वर्णनम्—	५१७
७५	श्राद्धाधिकारी कस्तन्निर्णयश्च, पितरिजीवति श्राद्ध वर्णनम्---	५१८
७६	अमायां तथान्यदिवसेऽष्टकाश्राद्धविमर्शः श्राद्ध- काल वर्णनञ्च---	५१८
७७	काम्यश्राद्ध विषय वर्णनम्—	५१९

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
७८	नक्षत्र विशेषेण श्राद्ध वर्णनम्, सदा रविवारे श्राद्ध निषिद्ध वर्णनञ्च—	५१६
७९	जन्मकुशादि नियमः, श्राद्धे प्रशस्त वस्तूनि च	५२१
८०	श्राद्धे पितृणां प्रधान वस्तूनि, पितृगीता वर्णनञ्च—	५२२
८१	श्राद्धान्नं पादाभ्यां न स्पृशेत् ।	५२३
८२	श्राद्धे ब्राह्मण परीक्षा वर्णनम्, त्याज्य ब्राह्मण वर्णनम्, हीनाधिकाङ्गान् वर्जयेत् ।	५२३
८३	श्राद्धे (पङ्क्तिपावन) प्रशस्त ब्राह्मण वर्ण०	५२४
८४	केषां सन्निधौ श्राद्धं न कर्तव्यम् तद्वर्णनम्	५२५
८५	पुष्करादि तीर्थेषु श्राद्धमहत्त्व वर्णनम् ।	५२५
८६	श्राद्धे वृषोत्सर्ग वर्णनम् ।	५२६

अध्याय ७२ से ८६ तक श्राद्ध का वर्णन आया है ।

८७	दान फलवर्णने-वैशाखेकृष्णामृगाजिनदान वर्ण०, कृष्णाजिनाद्यासन विधान विधि वर्णनञ्च ।	५२८
८८	गोदान महत्त्व वर्णनं तल्लक्षणञ्च ।	५२९

अध्याय ८७, ८८ में दान वर्णन—उर्ध्वमुखी गाय का दान ।

८६ सर्वदेवानाम्मध्येऽग्नेः प्राधान्यत्वं कार्तिके सर्व
पाप विमुक्ति वर्णनञ्च ।

५२६

इसमें कार्तिक मास में जितेन्द्रिय व्रत करता हुआ ज्ञान करता है वह मनुष्य सब पापों से छूट जाता है ।

६० मार्गशीर्षादि द्वादशमासान्निर्देशदान महत्त्व व० ५२६

मार्गशीर्ष के चन्द्रमा के उदय में सुवर्ण दान करे उसे रूप और सौभाग्य का लाभ होता है । पौष की पूर्णिमा में ज्ञान और दान कर कपड़े देवे तो पुष्ट होता है ।

माघ इत्यादि मासों के पूर्णमासी का व्रत, दान करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं ।

६१ कूप तडाग खनन तदुत्सर्ग विधानं, तल्लक्षणञ्च,
तन्निर्देश वस्तु दान महत्त्व वर्णनम् ।

५३२

कूबा और तालाब के दान करनेवाले सब योनियों में वृत्त रहता है । ब्राह्मण के घर या रास्ते में वृक्ष लगाने से वही फल उसके घर में पुत्र रूप से उत्पन्न होते हैं । जो उनकी छाया में बैठते हैं वे उनके मित्र और सहायक होते हैं । कूप तडाग और मन्दिर का जीर्णोद्धार करनेवाले को नये बनाने का फल होता है ।

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठांक
--------	------------	----------

६२ सर्वदानेष्वभय दान महत्त्व वर्णनम् ।	५३३
--	-----

सब दान से बड़ा अभय दान है । इसके साथ गोदान, सुवर्ण, लवण, धान्य, आदि दान का महत्त्व वर्णन आया है ।
दान के पात्र—गुरु, ब्राह्मण, दुहिता और जमाइ हैं ।

६३ दानाधिकारी ब्राह्मण लक्षण वर्णनम् ।	५३५
--	-----

दान के अधिकारी ब्राह्मणों के लक्षण हैं ।

६४ गृही कदा वनाश्रमी भवेत्तन्निर्णयः,-आचारोपदेश वर्णनश्च ।	५३६
---	-----

गृहस्थी बाल सफेद हो जाय तो वानप्रस्थ को चले जाय
या पौत्र हो जाय तो वानप्रस्थ को चल देवे ।

६५ स कर्तव्यता-वानप्रस्थाश्रम वर्णनम्	५३६
---------------------------------------	-----

वानप्रस्थ में तपस्या से शरीर को सुखा देवे ।

६६ सकर्तव्यता संन्यासाश्रम वर्णनम् ।	५३७
--------------------------------------	-----

तीनों आश्रमों में यज्ञ करने का विधान और संन्यासाश्रम का वर्णन है ।

६७ संन्यासीनां नियमः, तत्त्वानां विमर्शः, विष्णु-
ध्यान वर्णनम् ।

५४०

संन्यास के नियम—उसके शब्द रूप रस के विषयों से हटने का नियम, इस शरीर को पृथिवी समझो, चेतना को आत्मा समझे, किस संन्यासी को किस विचार से ध्यान करने का प्रकार, पुरुष शब्द का विषय, ज्ञान, ज्ञेय, गम्य ज्ञान का विचार ।

६८ जगत्परायण नारायण वर्णनम्, अष्टाङ्ग नम-
स्कारादि विधानविधिः, वसुमती नारायणं
प्रति प्रार्थयति ।

५४२

भगवान् वासुदेव का पृथिवी में चिन्तन करना ।

६९ लक्ष्मी वसुधा सम्भवाद वर्णनम्, लक्ष्मी निवा-
स स्थान वर्णनञ्च ।

५४४

पृथिवी का प्रार्थना और पूजन, लक्ष्मी का निवास—आंवला के वृक्ष, शंख, पद्म में, पतिव्रता, प्रियवादिनी स्त्रियों में लक्ष्मी का निवास है ।

अध्याय

प्रधानविषय

पृष्ठाङ्क

१०० वसुधां प्रति नारायणस्योक्तिः, एतद्धर्मशास्त्रस्य

माहात्म्य वर्णनञ्च

५४६

इस धर्मशास्त्र का महात्म्य ।

सम्बर्तस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय

प्रधान विषय

पृष्ठाङ्क

ब्रह्मचर्यवर्णनमाचारश्च, संक्षेपेण धर्म वर्णनम् ५४७

वामदेवादि ऋषियों का सम्बर्त से विनम्र प्रश्न (१-३) ।

धर्म्य देश जहां कम संस्कार करने का विधान है (४) ।

ब्रह्मचर्य का विधान, सन्ध्योपासना वर्णन आया है (५-३४) ।

कन्याविवाहवर्णनमाशौचवर्णनञ्च, गोदानमाहात्म्यं ५५०

विवाह प्रकरण (३५-३६) । अशौच शुद्धि (३७-३८) प्रेत-

कर्म (३९) । दसवें दिन शुद्धिः, एकादश दिन श्राद्ध कर्म,

द्वादश दिन शय्या दान (४५-४६) । विविध दान महात्म्य

(५०-६५) । कन्या का विवाह काल (६६) । दान का

विधान और प्रत्येक दान का महात्म्य (६७-६९) । गृहस्थी

की दिनचर्या (६७) ।

आचारव्यवहारयोश्च (दिनचर्या) वर्णनम्, वान-
प्रस्थ धर्म, यतिधर्म, पापानां प्रायश्चित्तं, सुरा-
पान प्रायश्चित्तं, गोवध प्रायश्चित्तं, जीवहत्या
प्रायश्चित्तं, अगम्यागमन, दुष्टानां-निष्कृति व०,
अस्पृश्य-स्पर्श वर्णनम्, अभक्ष्य-भक्ष्ये प्रायश्चित्त
वर्णनम् ।

५५६

वानप्रस्थ धर्म (६८-१०१) यति के धर्म (१०२-१०७) महा-
पापों की गणना और पापों का प्रायश्चित्त, उपपाप, संकीर्ण
आदि सब पापों का प्रायश्चित्त (१०८-२००) ।

दान माहात्म्यमुपवासव्रतं ब्राह्मणभोजनमहत्त्वं,
पापविमुक्त्यर्थं (सर्वप्रायश्चित्तं) गायत्री मन्त्र
जप प्राणायामस्य च वर्णनम् ।

५६६

उपवास व्रत ब्राह्मण भोजन कराने की तिथियां (२०३) गायत्री
जप, प्राणायामादि से पापमुक्ति बतलाई गई है (२०४-२२७) ।

दक्षस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय

प्रधान विषय

पृष्ठाङ्क

१ आश्रमवर्णनम् ।

५६६

बाल्यकाल में भक्ष्याभक्ष्य का दोष नहीं होता है (१-५) ।
उपनयन संस्कार नियमाचरण (६-१४) ।

२ ब्राह्ममुहूर्तादिनचर्याकृत्य वर्णनम्, वैदिक कर्म

गृहस्थाश्रमगुण वर्णनञ्च ।

५७१

उषा काल से दिन पर्यन्त कार्यक्रम का विधान दैनिक कार्य की सूची (१-१०) ।

उषा काल में स्नान सन्ध्या करने का माहात्म्य, सन्ध्या उपस्थान वर्णन (११-१६) । हवन ब्रह्मयज्ञ का समय (२०-३०) । दूसरों को भोजन देने से मनुष्यता होती है (३०-३५) । स्नान के प्रकार (३६) गृहस्थ के कर्म वह विभाग जिनके अनुसार चलने से गृहस्थाश्रमी उच्च कहलाने योग्य हो (३७-५६) ।

३ गृहस्थीनां नवकर्मविधानं सुखसाधन धर्म वर्णनञ्च ५७६

गृहस्थी के नव कर्म करने से मान्यता (१-६) । नवविकर्म (१०-१६) सुख का साधन धर्म और चरित्र बताया है (२०-३२) ।

४ स्त्रीधर्मवर्णनम् ।

५८१

सद्गृहस्थी पति पत्नी का धार्मिक प्रेम स्वर्ग सुखवत् है ।

५ बाह्याभ्यन्तर शौचवर्णनम् ।

५८३

शौच की परिभाषा तथा बाह्य एवं आभ्यन्तर शौच का वर्णन

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठाङ्क

(१-३) । हाथ पैर पर कितने बार मृत्तिका जल देवें, आगे जल से किस अंग को कितनी बार प्रक्षालन करना (४-१३) ।

६ जन्ममरणाशौचं समाधियोग वर्णनश्च ५८७

जन्म मरण का अशौच काल, किस दशा में अशौच कम ज्यादा होता है ।

७ इन्द्रियनिग्रहमध्यात्मयोगसाधनं तथा द्वैतानुभवा-
द्योगविकाशं स्मृति महत्त्व वर्णनम् । ५८६

इन्द्रियां पर विजय (१) अध्यात्म योग साधन और अद्वैत अनुभव से ही योग का विकाश (२-५४) और दक्षस्मृति पढ़ने का महात्म्य है ।

अङ्गिरसस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठाङ्क

सवप्रायश्चित्तविधानं, अन्त्यजानां द्रव्यभाण्डेषु जलपानं, अज्ञानवशाज्जलपानं, उच्छिष्ट भोजनं, नीलवस्त्रधारणं कृत्वा दानादिकरणे प्रत्यवायः, भूमौ नीलवपनाद् द्वादशवर्ष पर्यन्तं भूमेर-शुद्धिः, गोवधप्रायश्चित्तस्यनेकप्रकारेण वर्णनम्,

स्त्रीशुद्धिवर्णनं, अन्नभक्षणेन भेदान्तर
पापवर्णनम्, द्विविवाहितायाः कन्यायाअन्न-
भक्षणेन प्रायश्चित्तम्, दोषयुक्त मनुष्यान्न वर्णनम्
राजान्नं शूद्रान्नं च तेज वीर्यहासकत्वं, सूतकान्नं
मलतुल्यं, वर्णनं मिति ।

५६१

प्रायश्चित्त का विधान, अन्त्यज के व्रतन में पानी पीने से सान्तपन व्रत बताया है (१-६) । अज्ञान से पानी पीने पर केवल एक दिन का उपवास बताया है (७) । उच्छिष्ट भोजन करने का प्रायश्चित्त बताया है (८-१४) । नीला वस्त्र पहनकर भोजन दान करने से चान्द्रायण व्रत (१५-२२) । जिस भूमि पर नील की खेती एक बार भी की जाय वह भूमि बारह वर्ष तक शुद्ध नहीं होती (२४) । गाय के मरने पर प्रायश्चित्त बताया है औषधि या भोजन देने से गाय मरे तो चौथाई प्रायश्चित्त बताया है (२५-२८) । गोपाल या स्वामी की असावधानी से शृङ्गादि टूटने से गाय के मरने पर भिन्न भिन्न प्रकार का प्रायश्चित्त बताया है (२९-३४) । रजस्वला स्त्री की शुद्धि (३५-४२) । अन्न के दोष और जो जिसका अन्न खाता है उसको उसका पाप भी लगता है (४३-५८) । उन स्थानों की गणना जहां पादुका पहनकर

नहीं जाना चाहिये (५६-६३) । जिसका अन्न नहीं खाना चाहिये उसका खा लेने पर चान्द्रायण (६४-६५) । जो कन्या दुबारा व्याही जाय उसका अन्न खाने से दोष (६६) । जिन-जिन का अन्न आने में दोष हो उसका वर्णन (६७-७२) । राजा के अन्न से तेज का हास, शूद्र के अन्न सेवन से ब्रह्मचर्य का हास और सूतक का अन्न बिलकुल दूषित (७३) ।

शातातपस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
१	अकृत प्रायश्चित्त वर्णनम्	५६८
	पाप करने पर जो प्रायश्चित्त नहीं करते हैं उनके नरक भोगने के बाद आगामी जन्म में पाप सूचक कुछ चिह्न होते हैं (१-२) । महापातक के चिह्न सात जन्म तक रहते हैं (३) ।	
१	पूर्वजन्माकृत प्रायश्चित्त चिन्हम्	५६९
	उपपातक के चिह्न पांच जन्म तक, सामान्य पापों का तीन जन्म तक । दुष्ट कर्मों से जो रोग होते हैं उनकी जप, देवा-र्चन, हवन आदि से शान्ति की जाती है (४) । पहले जन्म के किये पाप नरकभोगगति के अनन्तर बीमारी के रूप में आते हैं उनका शमन जप दानादि से होता है (५) । महापातकादि से होनेवाले रोग कुष्ठ, यक्ष्मा, ग्रहणी, अतिसार आदि होते हैं (६-७) । उपपातक से श्वास, अजीर्ण आदि	

रोग बताये हैं (८)। पापों से होनेवाले कम्प, चित्रकुष्ठ, पुण्डरीकादि रोग (९)। अति पाप से उत्पन्न होनेवाले रोग अर्श आदि (१०)। इन पाप जन्य रोगों का शमन करने का उपाय दान जप आदि बताये गये हैं (११-३२)।

१ ब्राह्मणमहत्त्व वर्णनम् ।

६०१

इन पापजन्य बुराइयों के शमन करने को ब्राह्मण द्वारा जप दान आदि बताये हैं।

२ कुष्ठनिवारण प्रयोग वर्णनम् ।

६०१

ब्रह्म हत्या से पाण्डु कुष्ठ आदि होते हैं उनका प्रायश्चित्त का विवरण है (१-१२)।

२ सामवेदेन सर्वपाप प्रायश्चित्तम् ।

६०३

गोवध प्रायश्चित्त का विधान, सामवेद पारायण, (१३-१६)।

२ हन्तृक-फलानाशयोपाय वर्णनम् ।

६०५

पितृ हत्या से जो अचैतन्य रोग होता है उसका विधान। मातृ हत्या से जो अचैतन्य रोग होता है उसका विधान (२०-२५)। वह्नि हत्या के पाप का प्रायश्चित्त (२६-३५)। स्त्रीघाती एवं राज घाती के प्रायश्चित्त (३६-४२)। भिन्न भिन्न पशुओं के वध का भिन्न भिन्न प्रायश्चित्त (४३-५७)।

३ प्रकीर्णरोगाणां प्रायश्चित्तम्

६०७

प्रकीर्ण रोगों का प्रायश्चित्त (१-६)। सुरापान आदि अभक्ष्यभक्षण का प्रायश्चित्त (७-१५)। विष दाता, सड़क तोड़नेवाले को रोग और प्रायश्चित्त। गर्भपात करने से यकृत प्लीहा आदि रोग होते हैं उनके प्रायश्चित्त, जल घेनु और अश्वत्थ का पूजन और दान करना (१६-१६)। दुष्टवादी का अंग खण्डित हो जाता है (२०-२१)। सभा में पक्षपात करनेवाले को पक्षाघात रोग, उसका प्रायश्चित्त (२२)।

४ कुलध्वंसकस्य, स्तेयस्य च प्रायश्चित्तम् । ६०८

कुल को नाश करनेवाले को प्रमेह की बीमारी और उसका निदान (१)। ताम्बा, कांसा, मोती आदि चोरी करने से जो रोग होते हैं उसका वर्णन और प्रायश्चित्त (२-७)। दूध दही आदि चोरनेवाले को रोग उसका निदान (८-१०)। मधु चोरी करनेवाले को बीमारी और उसका प्रायश्चित्त (११-१२)। लोहा की चोरी से रोग की उत्पत्ति और उसका प्रायश्चित्त (१४)। तेल की चोरी से रोग और प्रायश्चित्त (१५)। धातुओं के चोरने से रोग और उसका प्रायश्चित्त तथा वस्त्र, फल, पुस्तक, शाक, शय्या छोटी वस्तु

चोरने से जो जो बीमारी होती है उनका विस्तार, उनके शमनार्थ प्रायश्चित्त, व्रत, दान (१६-१६) ।

५ अगम्यागमन प्रायश्चित्तम् ।

६१३

मातृ गमन से मूत्रकुष्ठ (लिंग नाश) रोग उनके शमन का प्रायश्चित्त और दान का विधान (२६) । लड़की के साथ व्यभिचार करने से रक्तकुष्ठ उसकी शान्ति (२७) । भगिनी के साथ व्यभिचार करने से पीतकुष्ठ (२८) । ऊपर के पापों का प्रायश्चित्त विधान और दान (२६-३२) । भ्रातृ भार्या गमन करने से गलित कुष्ठ होता है (३६) और वधू के पास गमन करने से कृष्ण कुष्ठ होता है (३७) (तथा चतुर्थ अध्याय में भी मातृगमन भगिनी गमन के रोग और शान्ति हैं) उक्त रोगों का प्रायश्चित्त और दान वर्णन है । तपस्विनी के साथ गमन करने से अश्मरी रोग, (पथरी रोग) । राज और राजपुत्र को चोरी से मारना, मित्र में भेद करानेवाले का वर्णन, गुरु को मारने से रोग और प्रायश्चित्त । छोटे-छोटे पापों का वर्णन और प्रायश्चित्त तथा व्रत शान्ति का वर्णन । पांचवें अध्याय में मातृगमन से लेकर भगिनी आदि अगम्या गमन से जो कुष्ठ रोग असाध्य रोग होते हैं उनकी शान्ति का विस्तार, देव प्रतिमा, पूजन, दान, हवन आदि प्रायश्चित्त बताया है ।

६ अनुचित व्यवहारफलम् ।

६१६

पञ्चत्रिंशत् (पैंतीस प्रकार से मरा हुआ पितृगति क्रिया को नहीं पाता है । आकस्मिक मृत्यु बिजलीपात इनको श्राद्ध में लेपभुज कहा है (१-४) । अनायास मृतक की गति न होने से ये प्रेतादि योनियों में जाते हैं और बालकों का हरण होता है (४-६) । अपमृत्यु से जो मरते हैं उनके कारण कौन पाप है, जैसे जो कुमारी गमन करे उसे व्याघ्र मारता है, जो किसी को विष देता है उसे सर्प काटता है, राजा को मारनेवाले को हाथी से मृत्यु होती है, मित्र द्रोही, बक वृत्ति वाले की मृत्यु भेड़िया से होती है (६-१६) ।

अगति प्रायश्चित्त वर्णनम् ।

६१८

उन उन पापों का प्रायश्चित्त दिखाया है (१७) । अपघात करनेवालों की नारायणवली का विधान किया है (२६) । इन पापों की शुद्धि के भिन्न भिन्न प्रकार के दान बताये हैं (३०-५१) ।

॥ स्मृतिसन्दर्भ प्रथम भाग की विषय-सूची समाप्त ॥

॥ शुभम् ॥

